खण्ड(क)
शोध मनोविज्ञान (पत्र-तृतीय)
स्नातक (प्रतिष्ठा) खण्ड(2)
डॉ० राजेन्द्र कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष,
डी०के० कालेज, डुमराँव(बक्सर)

परिकल्पना (HYPOTHESIS)

वैज्ञानिक ढंग से शोध का प्रारंभ समस्या-कथन के साथ-साथ परिकल्पनाओं के निर्माण से होता है। अतः परीक्षणीय परिकल्पना का निर्माण करना शोध का दूसरा प्रमुख प्रश्न होता है। परिकल्पना से अनुसंधानकर्ता को एक नई दिशा मिलती है जिसके सहारे शोध कार्य आगे बढ़ता है और वह निष्कर्ष पर पहुँच पाता है। इसीलिए शोध-शास्त्र में परिकल्पना-निर्माण को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसके महत्त्व को रेखांकित करते हुए जे०सी० टाउनसेण्ड (J.C. Townsend) ने ठीक ही कहा है:- "सभी शोधकर्ता वैज्ञानिक आविष्कार को अपना लक्ष्य बनाते हैं, अतः इनकी परिकल्पनाएँ सत्य को पाने के लिये फैली हुई भुजाओं की तरह होती हैं।" (Since all researchers aim to scientific discovery, their hypothesis are outstretched arms reaching for the truth)."

इसकी परिभाषा विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से दी है जो परिकल्पना के स्वरूप एवं अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता प्रदान करता है! कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नवत् हैं:—
टाऊनसेण्ड के अनुसार - "परिकल्पना एक समस्या का प्रस्तावित हल होता है।" इसी तरह गुड एवं हैट ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है;—
"परिकल्पना यह बताती है कि हमें क्या खोज करनी है! यह भविष्य की ओर देखती है। परिकल्पना एक तरह की साध्य होती है, जिसकी वैधता की जाँच की जा सकती है, जो सत्य या असत्य कुछ भी हो सकती है।"
लुण्डबर्ग के अनुसार "परिकल्पना एक अस्थाई निष्कर्ष होती है, जिसकी सत्यता की जाँच अभी शेष रहती है।" प्रसिद्ध शोधवैज्ञानिक करलिंगर ने इसका बड़ा ही सुन्दर परिभाषा दी है —
"परिकल्पना दो या दो से अधिक परिवर्त्यों के बीच के